Baglamukhi Panzar Stotram

१०

श्री बगलापञ्जर स्तोत्रम्

यह अति गोपनीय व रहस्यपूर्ण पञ्जर अति दुर्लभ तथा परीक्षित है। इस पञ्जर का जप अथवा पाठ करने वाला साधक प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का सोपान करता है। घोर दारिद्रय व विघ्नों के नाशक इस स्तोत्र का पाठ करने वाले साधक की माँ बगला स्वयं रक्षा करती हैं। अरिदल साधक को मूक होकर देखते रह जाते हैं।

◆ **विनियोग** ◆

ॐ अस्य श्रीमद्-बगलामुखी-पीताम्बरा-पञ्जर रूप स्तोत्र मन्त्रस्य भगवान नारद ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमो मुखे, जगद-वश्यकरी श्री पीताम्बरा बगलामुखी देवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो दक्षिण स्तने, स्वाहा शक्तये नमो वाम स्तने, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, मम् परसैन्य मन्त्र तन्त्र आदि कृत विपक्ष क्षयार्थं श्रीमत्पीताम्बरा बगलादेव्या प्रीतये, स्वाभीष्ट सिद्धये च जपे विनियोगः।

कर न्यास	अङ्गन्यास
ह्लां अगुष्ठाभ्यां नमः।	ह्लां हृदयाय नमः।
ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।	ह्लीं शिरसे स्वाहा।
ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्।	ह्लूं शिखायै वषट्।
ह्लैं अनामिकाभ्यां हुँ।	ह्लैं कवचाय् हुं।
ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ह्लः करतलकरपृष्टाभ्यां फट्।	ह्लः अस्त्राय् फट्।

◆ **व्यापक न्यास** ◆

ॐ ह्लीं अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं। ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल कर पृष्टाभ्यां फट्।

इसी प्रकार मूल मन्त्र से अङ्गन्यास करें–

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।
ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा।
ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्।
ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्।
ॐ जिह्वां कीलय् नेत्र त्रयाय वौषट्।
ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा, अस्त्राय फट्।

◆ **ध्यान** ◆

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्नवेधां,
सिंहासनों परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गी,
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वां।

इसके उपरान्त मानस पूजा करें–

श्री पीताम्बरायै नमः लं पृथिव्यात्मकं गंधं परिकल्पयामि।
श्री पीताम्बरायै नमः हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।
श्री पीताम्बरायै नमः यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।
श्री पीताम्बरायै नमः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि।

इसके उपरान्त महामाया को योनिमुद्रा से प्रणाम करके स्तोत्र का पाठ शुरू करें–

।। पञ्जर स्तोत्र ।।

पञ्जरं तत् प्रवक्ष्यामि देव्याः पाप प्रणाशनम्।
यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नरा क्वचित् ।।१।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत्पीताम्बरादेवी बगला बुद्धिवर्द्धिनी।
पातु माम निशं साक्षात् सहस्रार्कसमद्युति ।।२।।
शिखादिपादपर्यन्तं वज्रपञ्जर धारिणी।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमद् ब्रह्मास्त्रविद्याया पीताम्बरा विभूषिता ।।३।।
बगला मामवत्वत्र मूर्ध भागं महेश्वरि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामाङ्कुशकला पातु बगलाशास्त्र बोधिनी ।।४।।
पीताम्बरा सहस्राक्षा ललाटं कामितार्थदा।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरा सुधारिणी ।।५।।
कर्णयोश्चैव युगपद अतिरत्न प्रपूजिता।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा ।।६।।
पीतपुष्पै पीतवस्त्रै पूजिता वेददायिनी।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला ब्रह्माविष्णवादिसेविता ।।७।।

पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद् भ्रुवो।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला वलिदा पीतवस्त्रधृक ॥८॥
अधरोष्ठौ तथा दन्तान जिह्वां च भुखंगा मम।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बर सुधारिणी ॥९॥
गले हस्ते तथा वाह्वोः युगपद् बुद्धिदा सताम्।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला दिव्यस्रगनुलेपना ॥१०॥
हृदये च स्तनौ नाभौ करावपि कृशोदरी।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगलापीतवस्त्र घनावृता ॥११॥
जघांया च तथा चोर्वोर्गुल्फयोश्चातिवेगिनी।
अनुक्तमपि यत स्थानं त्वकेशनखलोमकम् ॥१२॥
असृंग माँस तथाऽस्थिनी सन्ध्यश्चापि मे परा।
ताः सर्वा बगलादेवी रक्षेन्मे च मनोहरा ॥१३॥

॥ पञ्जरन्यास स्तोत्रम् ॥

बगलापूर्वतो रक्षेद आग्नेय्यां च गदाधरी।
पीताम्बरे दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैऋते ॥१॥
जिह्वां कीलयन्तो रक्षेद् पश्चिमे सर्वदा हि माम्॥
वयव्ये च मदोन्मत्ता कौवेर्यां च त्रिशूलिनी ॥२॥
ब्रह्मास्त्र देवता पातु ऐशान्यां सततं मम।
संरक्षेन मां तु सततं पाताले स्तब्ध मातृका ॥३॥
उर्ध्व रक्षेन महादेवि जिह्वां स्तम्भनकारिणी।
एवं दश दिशौ रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा ॥४॥
एवं न्यास विधिं कृत्वा यत् किंचित जपमाचरेत्।
तस्याः संस्मरणादेव शत्रुणां स्तम्भनं भवेत् ॥५॥

卐 卐 卐

विशेष → इस पञ्जर न्यास स्त्रोत का पाठ जपादि से पूर्व करना चाहिये। इस स्तोत्र का पाठ करने से साधक पर साक्षात् भगवती पीताम्बरा का कवच बन जाता है, और उसके स्मरण मात्र से ही शत्रुओं की गति, बुद्धि और मुख स्तम्भित हो जाते हैं।

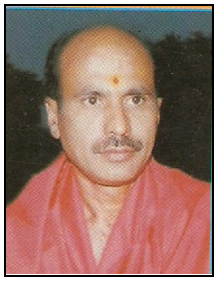

About The Author

Name :- **Shri Yogeshwaranand Ji**
Mb :- **+919917325788, +919675778193**
Email ;- **shaktisadhna@yahoo.com**

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

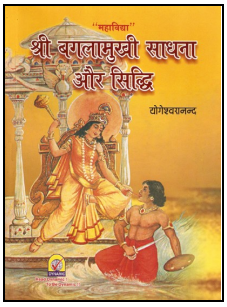

Download Click Here

2. **Mantra Sadhna**

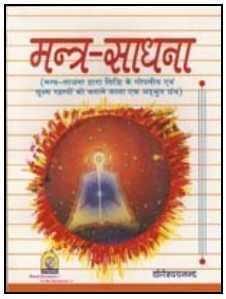

Download Click Here

3. **Shodashi Mahavidya**

Download Click Here